चेचक रोग (पॉक्स)

परिचय

- यह गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी में पाया जाने वाला विषाणुजनित संक्रामक रोग है जो थन अयन एवं त्वचा पर विक्षप्तियों के रूप में प्रकट होता है । विभिन्न विभेदों के विषाणु इस रोग के जनक हैं।
- चेचक रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी में देश के अनेक राज्यों में उल्लेखित है।
- भारत में यह स्थाजन्य (एन्डेमिक) रोग है।
- इस रोग का संचरण एक दूसरे के द्वारा या संसर्ग या संक्रमित इन्जेक्शन के द्वारा हो सकता है ।
- दूध दोहन करने वाले के हाथों द्वारा या दूध निकालने की मशीन भी इस रोग के प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुँह व आँख के पास चेचक

त्वचा पर चेचक के छाले

- यह रोग जन स्वास्थ्य एवं पशु स्वास्थ के दृष्टिगत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पशुओं से मनुष्य में संचरित हो सकता है ।
- भेड़ के रेबड़ में पशु रोग प्रभावन दर 70% तक उल्लेखित है। जबकि गाय और भैंस में इस रोग से मृत्यु दर इतनी नहीं है।
- भेड़ में इस रोग से होने वाली मृत्यु विपरीत परिस्थितियों में बहुत अधिक हो सकती है। जो कि पशुपालको के लिये अत्याधिक आर्थिक हानि का कारण हो सकता है।
- यह रोग सर्दी के मौसम में ज्यादा होता है क्योंकि उच्च तापमान पर इस रोग का विषाणु जीवित नहीं रह पाता है।

लक्षण

- इस रोग से प्रभावित पशु के शरीर मे दाने, ज्वर, भूख की कमी, उदासीनता, अवसाद और आँख से पानी बहने की परेशानी होती है।
- थन, अयन तथा जांघों के अंदर की सतह को चेचक की विशेष विक्षप्तियों से प्रभावित देखे जा सकते हैं।
- संक्रेन्दित रूप में ये विक्षप्तियाँ थन के आस–पास के क्षेत्र में देखी जा सकती हैं। परन्तु सामान्य रूप से प्रभावित पशु के अन्य अंग जैसे होठ, कान, नथुनें रोग से प्रभावित होते हैं ।
- रोग से प्रभावित पशु का दूध पीने से अल्पायु या नवजात पशु मसूड़ों की विक्षप्तियों के शिकार होते हैं।

उपचार

- इस रोग की कोई निश्चित चिकित्सा उपलब्ध नहीं है।
- अन्य संक्रमण रोकने के लिए ऐन्टीबायोटिक एवं ज्वर प्रतिरोधी चिकित्सा का प्रयोग यथा शीघ्र करना उचित होता है।
- प्रभावित पशु में थनैला रोग को रोकने के उपाय भी किए जाने चाहिए।
- यदि पशु के मुँह में अत्यधिक परेशानी हो और पशु चारा ना खा रहा हो तो उस परिस्थिति मे पशु को तरल चिकित्सा देने का प्रबंध करना चाहिये ।

रोकथाम

- वर्तमान में गाय, भैंस के लिए इस रोग के विरूद्ध उपयुक्त टीका उपलब्ध नहीं है।
- भेड़ एवं बकरी में इस रोग के लिए उपलब्ध टीके का प्रयोग स्थाजन्य क्षेत्र में किया जाना चाहिए।
- बकरियों में चेचक का टीका तीन से चार माह की आयु में दिया जाता है।
- पहले टीके के 21 दिन बाद बूस्टर का प्रयोग करें। कालान्तर में प्रतिवर्ष टीके का प्रयोग करें।
- चेचक रोग संक्रमण की स्थिति में साफ सफाई के नियमों का कठोरता से पालन करें।
- बीमार पशुओं की तीमारदारी में लगे लोग भी रोग को फैला सकते हैं। अतः उन्हें अपने हाथों को तीव्र कीटाणुनाशक के घोल से धोना चाहिए ।
- बाड़े में नीम की पत्तियों का बिछावन रोग को फैलने से रोकने में मदद करता है।
- नीम के काढ़े के घोल से पशु को नहलानें से संक्रमण को रोकने मे मदद मिलती है।

लेखक :

डॉ0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग
डॉ0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय
डॉ0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक
डॉ0 अखिलेश कुमार, वैज्ञानिक, औषधि विभाग

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304